।। छठा पाठ ।।

।। छलगारी राक्षसी का भ्रम मिटाना ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
तीर सिराने धर बलवानी । इसी किनारे रात बितानी ।।
शिव की स्तुति स्वर से गाई । गूँज उठी थी तब बणराइ ।।
मोहनी राग सुरीली गावे । शिव चरणों में ध्यान लगावे ।।
एक राक्षसी ने सुन लीन्ही । पास जाने की सुरत कीन्ही ।।
सुन्दर रुप मोहनी धर कर । नई नवेली गूजरी बन कर ।।
छम छम करती चल दई दानी । देख संकुचित हुआ बलवानी ।।
बोली दानी कहाँ से आए । संग में बिस्तर भी नहीं लाये ।।
धरती पर तुम क्यों सोते हो । राज कुँवर मालूम होते हो ।।
बर्बरीक बोला क्रोध की बानी । तुमको क्या चिन्ता नादानी ।।
धरती ही है माता प्यारी । यही विछौना सेज हमारी ।।
रुपवती ने ढोंग रचाया । नाच मोहना वहाँ दिखाया ।।
राग रागनी मोहनी गाई । बार बार लेती अंगडाई ।।
बोली मन्द मन्द मुस्काकर । हाथ जोड़ और शीश नवाकर ।।
मैं अच्छे घर की जाई हूँ । फिरती भटकती दुःख पाई हूँ ।।
कोई पति नहीं मुझको पाया । तुम पर मैंने नेह लगाया ।।

दोहा - बर्बरीक गरजा जोर से, भाग भाग चण्डाल ।
वरना तेरा आज आ गया, मेरे हाथ से काल ।। क ।।
मुझको नींद थी आ रही, तुने उकाई आय ।
दूर भाग जा छोड़ किनारा, और ढूंढ कोई जाय ।। १२९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
दानी हँस हँस कर मुस्काई । अपनी विद्या खूब चलाई ।।
दानी जाने था ये कहानी । नार पै हाथ ना उठावे बलवानी ।।
और ढोंग दूना ही रचाया । नाच गान और धूम मचाया ।।
जब नहीं पेश चली है कोई । अपने रुप धरयो जो होई ।।
हाथ पकड़ने सामने आई । बर्बरीक ने आवाज लगाई ।।
हे मेरी माता रक्षा करियो । इस विपता को जल्दी हरियो ।।
माथे जो बिन्दी चमके थी । लाल किरण बनके चमके थी ।।
तेज किरण अग्नि की निकली । दानी जलती हा हा बिचली ।।
राख हो गई एक पल माँही । बर्बरीक को अब कोई भय नांही ।।

दोहा - गहरी नींद में सोय गया, अहिलवती का लाल ।
भोर होवत ही पूजा करके, लीनी राह सम्भाल ।। क ।।
मेवा फल अति लग रहे, तोड़ तोड़ के खाय ।
लम्बी मंजिल तय करनी है, यही सोचता जाय ।। १३० ।।

।। श्री कृष्ण भगवान ब्राह्मण के भेष में ।।
।। बर्भरीक से मिलते हैं और पूछते हैं ।।

।। भजन ।।

(तर्ज - होठों से छुलो तुम....)
माधव यूँ पूछ रहे, तेरा नाम बता हे वीर,
जाने क्यों देख तुझे, मेरा मनवा हुआ अधीर ।। टेर ।।
किस कुल में जन्में हो, किस देश से तुम आये,
यहाँ खेल ना बच्चों का, तीन बाण उठा लाये,
तुम लौट चले जाओ, अभी नाजुक तेरा शरीर ।। १ ।।

बर्बरीक है नाम मेरा, अहिलवती का जाया,
जाने का प्रश्न ही क्या, मैं युद्ध करन आया,
युद्ध के निर्णय के लिये, काफी हैं मेरा एक तीर ।। २ ।।

जिस बाण पे गर्व तुझे, करतब दिखला उसका,
एक बाण चला करके, इस बृक्ष का हर पत्ता,
तुम बींध के दिखलावो, मानूँ मैं तुम्हें रणधीर ।। ३ ।।

एक बाण से पीपल के, पत्तों में छेद किया,
एक पत्ता पाँव तले, हरि ने था दबा लिया,
जब बाण बहाँ पहुँचा तो, माधव हुए गम्भीर ।। ४ ।।

श्रीकृष्ण यूँ समझ गये, सामर्थ्य ये रखता है,
अनहोनी को होनी, क्षण में कर सकता है,
क्षण में ही बदल देगा, ये तो सबकी तकदीर ।। ५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पथिक जा रहा रण का पुजारी । पाण्डव वंशी शत बलधारी ।।
रात कहीं विश्राम करत है । भोर होवत ही कदम धरत है ।।
दो दिन बाकी रण के मांही । बाकी थोड़ी है अब राही ।।
बर्बरीक मगन हो राह जावे था । ब्राह्मण एक सन्मुख आवे था ।।
तिलक ललाट माथे पर मोहवे । काख में वेद किताबा सोहवे ।।
ऊँची धोती गोड़ा तांई । सुन्दर तन मोहन परछांई ।।
पाँव खडाऊँ टक टक बाजे । गल में जनेऊ मोहनी साजे ।।
बर्बरीक ने जब ये जाना । ब्राह्मण पथ से आवे स्याना ।।
राह से अलग होय बलवानी । दे दी राही आवे ज्ञानी ।।

ब्राह्मण पास में चल कर आया । बर्बरीक ने शीश नवाया ।।
पण्डित ने आशीष देई है । रुक कर के एक बात कही है ।।
कौन वंश के राज कुमारा । राज पाट है कहाँ तुम्हारा ।।

दोहा - कौन मात के लाड़ले, कौन देश है गाँव ।
वीर भेष में है बली, शीघ्र बताओ नाम ।। क ।।
है बालक मनमोहना, बल में हो सरनाम ।
कौन दिशा को जा रहे, खोल बताओ काम ।। ख ।।
बर्बरीक मेरा नाम है, अहिलवती है मात ।
पाण्डव वंश में जन्म लिया है, क्षत्री हमारी जात ।। ग ।।
युद्ध देखन को जा रहा, मात की ले आशीष ।
रण में जूझूँगा मेरे देवा, चाहे जावे शीश ।। १३१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पण्डित ने एक नजर घुमाई । ऊपर नीचे देखन ताई ।।
फिर तनकर के पण्डित बोला । हे बालक तू दिखता भोला ।।
रण में महाबली आयेंगे । फौज संग में सब लायेंगे ।।
तीर घनेरे संग में लावें । रथ पर बैठा शंख बजावें ।।
तू तो अकेला कैसे आया । माता ने भी क्यों भिजवाया ।।

दोहा - रण भूमि में जा रहे, फौज नहीं है साथ ।
हाथी घोड़े पालकी, वहाँ सजे दिन रात ।। क ।।
ढोल नगारे संग चले, बजते रहे एक साथ ।
हे बालक तू आयो अकेलो, कोई न पूछे बात ।। १३२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
भोली मात तुम्हारी होगी । किस गफलत की नींद में सोगी ।।
तीन तीर दे बिदा किया है । थोड़ा भी नहीं ज्ञान लिया है ।।

क्या होगा इन तीन तीर से । वहाँ आये द्रोणा रणधीर से ।।
बाणों की वर्षा होवेगी । बलियों की सुध बुध खोवेगी ।।
हे बालक तुम कहना मानो । हमरा कहना सत्य ही जानो ।।
वापस घर को तुम चले जाओ । यूँ ना अपनी जान गँवाओ ।।
तीन तीर का कौन ठिकाना । दानी कर्ण से आये बलवाना ।।

दोहा - बर्बरीक ने तब हाथ जोड़, दीनों भेद बताय ।
एक बाण से रण को जीतूं, ओर बचत रह जाय ।। क ।।
कितनी सन्मुख फौज हो, कितने हो बलवान ।
एक बाण से सबको मारूँ, ऐसा मेरा निशान ।। ख ।।
कैसे मानूं बात को, पढ़ने में नहीं आय ।
जितनी सोचूँ समझ में, गहराई न हीं पाय ।। ग ।।
मुखड़े तेज सुहावनो, पलकाँ ज्योत समाय ।
वरि भेष में है बली, भोली बात बनाय ।। १३३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पण्डित भी हँस कर बोला है । इस कारण ही तु भोला है ।।
ये सच कैसी बात तुम्हारी । बहक गये हो अकल है मारी ।।
एक बाण है शक्ति धारी । नहीं माने है बुद्धि हमारी ।।
तुमको निश्चय ही बहकाया । किसके कह से तू चला आया ।।
उसका नाम मुझे बतलाओ । माता कह कर काहे छुपाओ ।।
मात कभी नहीं अपना लाला । काल के मुँह में लाकर डाला ।।
माता ने नाहीं बहकाया । और किसी ने दाँव चलाया ।।
एक बाण में शक्ति ऐसी । आज तलक नहीं देखी जैसी ।।
क्षत्री वंश तू निश्चय लाला । बलवानी है भोला भाला ।।
और बाण तुम जाकर लाओ । फिर वापस रण माँही जाओ ।।

दोहा - अहिलवती के लाल ने, कह दी सांची बात ।
करो परीक्षा पण्डित देवा, इसी घड़ी और स्यात ।। क ।।
बात हमारी सत्य है, इसमें मीन न मेख ।
एक बाण में सृष्टि मारूँ, ये बिधना का लेख ।। १३४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पण्डित ने गरदन को हिलाया । धीरज देकर फिर समझाया ।।
कैसे परीक्षा करूँ तुम्हारी । फौज यहाँ पर नहीं है भारी ।।
अच्छे कुल के तुम बालक हो । सच्चे पथ के तुम चालक हो ।।
मानता हूँ तुम सब सच कहते । ज्ञानी सत्संग में तुम रहते ।।
फिर भी परीक्षा लेऊँ तुम्हारी । हार गये जो तुम बलधारी ।।
वापस घर को जाना होगा । और बाण ले आना होगा ।।

।। बर्बरीक की परीक्षा (पत्ता छेदन)

आओ हमारे साथ में आओ । निश्चय मनमें करके आओ ।।
लेऊँ परीक्षा अभी तुम्हारी । कैसा बाण है शक्तिधारी ।।
पीपल गहरा घनेरी छाया । पण्डित चलकर वहाँ पे आया ।।
इस पीपल को देखो लाला । कितने पत्ते कितने डाला ।।
सब पत्तों को छेदन कर दो । दूर भ्रम पल भर में कर दो ।।

दोहा - बर्बरीक माता को याद कर, बोले मीठी बात ।
पण्डित जन की आज्ञा मानो, दीनी शिक्षा मात ।। क ।।
आज्ञा मुझे मन्जुर हैं, जो दीनो फरमाय ।
अभी भ्रम को दूर करूँगा, बाण शक्ति दिखलाय ।। १३५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बाण तान होशियार होवत हूँ । आज्ञा की मैं बाट जोवत हूँ ।।
पण्डितजी ने मता उपाया । पांव तले एक पात दबाया ।।
पगथली नीचे पात छुपाया । जहाँ प्रभु की अद्भूत माया ।।
पगथली में ही प्राण पियारे । पात छुपाओ कौन निहारे ।।
बर्बरीक कीनी मात प्रणामी । जो बलियों में भई बल नामी ।।
जो जो शिक्षा मात से पाई । बाण नीति जिस तरह बताई ।।
उसी तरह होशियार होय कर । बाण निशान की लगन खोयकर ।।
बोले अब आज्ञा फरमाओ । मैं होशियार हूँ हुक्म सुनाओ ।।
पण्डित जी ने आज्ञा कीन्हीं । बाण चलाओ मुख कह दीन्हीं ।।
पण्डित एक टक होय निहारे । कैसा बली है मन में विचारे ।।

दोहा - बाण तरकस से चला, पत्तों को रहा छेद ।
सारे पत्ते बींध दिये, एक का नाहीं भेद ।। क ।।
तीर ढूँढने को चला, तीनों लोक भवन ।
बेग बाण की चाल घनेरी, चलती मन्द पवन ।। १३६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बाण पात को ढूँढने आवे । पाताल लोक को चीरता जावे ।।
अन्तरयामी ने जब जाना । इस जैसा नहीं कोई बलवाना ।।
पाँव हटाया वेद का ज्ञानी । तीर ने चीर करी है निशानी ।।
वापिस तीर घूम कर आया । लाले ने तरकस में सजाया ।।
रूप चतुर्भुज धारी दिखायो । बर्बरीक ने शीश नवायो ।।
रूप साँवरो मोहिनी काया । शंख चक्र गदा पद्म की माया ।।

शीश मुकुट मणी चम चम चमके । गले बैजन्ती माला छमके ।।
मुख मुस्काम की लीला प्यारी । आशीष दीन्यों कृष्ण मुरारी ।।

दोहा - बलियों में बलवान हो, बुद्धि में चतुर सुजान ।
तुमरी माता धन्य हो क्षत्री, दीनो सच्चो ज्ञान ।। क ।।
रण में भी रणधीर तो, तुम जैसा कोई नाय ।
दिगविजयी है नाम तिहारो, सत से सब झुक जाय ।। १३७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बर्बरीक ने फिर शीश नवाया । हाथ जोड़कर बचन सुनाया ।।
आपने आकर दर्श दिखाया । धन्य हो गई है मेरी काया ।।
नित आकर ही दर्श दिखाओ । इतना कहना आप पुगाओ ।।
बोले भगवन जो चाहोगे । मन वांछित फल तुम पाओगे ।।

चौ. - पीताम्बर साजे तन उजलो, चमकीलो रंग रंगीलो है ।
मुखड़े पर वैभव गौरव है, सौन्दर्य छैल छबीलो है ।। क ।।
पलकों में नैणा स्नेह सजे, ज्योति में जोश सजीलो है ।
भोहें उभरी ज्यों चन्द उदय, चकोरी मेल रुचीलो है ।। ख ।।
चमकीलो रूप है मोहनो, पण्डित भेद छुपाया है ।
परछाई मेरे मन भाई, अन्तर में रंग रचाया है ।। ग ।।
श्री श्याम रुप दे दो मुझको, जो सन्मुख मैंने पाया है ।
तुम चाहो वैसा रूप धरो, यह रुप मेरे मन भाया है ।। १३८ ।।

दोहा - जो चाहोगे फल पावोगे, श्याम मोहना रुप ।
देवों में सरनामी देवा, बलियों में बली भूप ।। क ।।
सकलाई मेरी दई, मेरा ही अनुरुप ।
मेरे नाम से जगती पूजे, खिले सत्य की धूप ।। १३९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अन्तरयामी अन्तर ध्यानी । छुप गये पल में पण्डित ज्ञानी ।।
बर्बरीक ने झुक दण्डवत कीन्हीं । चरण की रज माथे धर लीन्हीं ।।
चला पथिक पकड़ी है राही । युद्ध देखने की ध्यान लगाई ।।

दोहा - साँझ भई लिये चांदनी, एकादशी की रात ।
एक तालाब किनारे ठहरा, रण दल पहुँच प्रभात ।। क ।।
त्रियोदशी को युद्ध हो, वार था मंगलवार ।
भोर होवत ही बर्बरीक पहुँचे, देखे युद्ध बहार ।। १४० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
एकादश की रात सुहानी । दर्शन दीन्हों अन्तर ध्यानी ।।
बर्बरीक ने यही मांग करी थी । हाथ जोड़ कर विनती करी थी ।।
नित दर्शन तुम देवो आकर । धन्य होऊ मैं तुमको पाकर ।।
आज तो दर्शन हो ही गये हैं । मुरलीधर अभी आके गये हैं ।।

कल आये द्वादशी प्रभाती । मुरलीधर बन जाइयो नाती ।।
रात को नींद नहीं आई है । एकादशी अति मन भाई है ।।
होवत भोर चला बलवानी । रण दल की कीन्हीं निगरानी ।।
रथ ही रथ यहाँ सजे हुए हैं । बाँध कतारें खड़े हुए हैं ।।
बर्बरीक चारों ओर निहारे । रण दल भारी मन में विचारे ।।
ध्वनि शंखो की गगन में छाई । देती है आवाज सुनाई ।।
रण सेना के वस्त्र हैं न्यारे । रंग रंगीले हैं उजियारे ।।
बाण धारी सब ही हैं प्राणी । खड़े हुए सज कर सावधानी ।।

चौ० - आपस में सैनिक बात करें, शंखों की ध्वनि बजाते हैं ।
बजते हैं ढोल नगारे मृदंग, ब्रह्माण्ड में शोर मचाते हैं ।। क ।।
घोड़ो के खुरों से धरती खुदी, रथ के पहिये धस जाते हैं ।
हाथी सुडें की स्वासों से, छट पवन झोल मुड़ जाते हैं ।। १४१ ।।

दोहा - बर्बरीक ने आवाज दे, पूछ सिपाही से बात ।
मुरलीधर अब कहाँ मिलेंगे, है गोपियन के साथ ।। क ।।
बोला सिपाही क्रोध कर, उसका यहाँ क्या काम ।
कौरव दल ये खड़ा हुआ है, आगे पुछो नाम ।। १४२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
रण दल चीर चला बलवानी । पूछता जावे ये ही कहानी ।।
मुरलीधर का कहाँ पे डेरा । पूछे बर्बरीक दे कर घेरा ।।
एक सिपाही भेद बताया । यहाँ पे कौरव दल है छाया ।।

दोहा - वीर समूहों दल बंधे, लम्बी सजी कतार ।
धनुष तीर तेग गदा लिये, भाले संग तलवार ।। क ।।
आज्ञा सूत्रों में जड़े, जीत को समझें हार ।
भांति भांति के वीर वेष में, आयो सभी संसार ।। १४३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
चले जाओ तुम सीधे प्राणी । वो तो अकेले यही निशानी ।।
पाँच है पाण्डव कृष्ण अकेला । मुरली धारी मनमोहना छैला ।।
दूर मिलेंगे आओ किनारे । कौरव दल शंख ध्वनि उच्चारे ।।
चला वीर रण दल के किनारे । वहाँ पे खड़े हो देख निहारे ।।
फिर इक वीर सिपाही से जाना । आगे चल जाओ वीर बलवाना ।।
जिसके रथ पर ध्वजा फहरावे । पवन पुत्र की मूर्ति लखावे ।।
वहीं कृष्ण का रथ है प्यारा । चले जाओ तुम राज दुलारा ।।
अहिला का लाला मन में बिचारे । ये कौरव नहीं रण में हारें ।।
अपार सेना इनके संग में । कैसे हारेंगे ये रण में ।।

दोहा - देख ध्वजा बजरंग की, छाई खुशी अपार ।
मुरलीधर जी यहाँ मिलेंगे, करनी करत विचार ।। क ।।
रथ के पास में जायकर, पूछा कृष्ण का नाम ।
मनमोहन जी कहते है, मुरलीधर घनश्याम ।। १४४ ।।

चौ०- केशव नटनागर कहते हैं, मोहन भी नाम बतायो है ।
घनश्याम नाम जगती बोले, मैया ने भेद सुनायो है ।। क ।।
है शान्ति में विश्वास मेरो, रण देखन मतो उपायो है ।
झुठे को मारूँ इक पल में, सांचे को डंको गुञ्जायो है ।। १४५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अन्तरयामी ने तब जाना । आ पहुँचा है वो बलवाना ।।
बर्बरीक के पास में आये । धीरज देकर सब समझाये ।।
मुरलीधर है नाम हमारा । तुम भी बताओ नाम तुम्हारा ।।
क्या चाहते हो कहाँ से आये । मनमोहन जी वचन सुनाये ।।

बर्बरीक ने फिर दण्डवत कीन्हीं । हाथ जोड़ बलिहारी लीन्हीं ।।
बर्बरीक अपनी कथा सुनाये । पंचवटी के पास से आये ।।

दोहा - अहिलवती का लाल हूँ, बर्बरीक मेरो नाम ।
पाण्डव वंश में जन्म लियो है, हे मोहन घनश्याम ।। क ।।
माताजी कहने लगी, आपको नाम बताय ।
मनमोहन से जाक कहियो, बात सभी समझाय ।। १४६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
युद्ध देखन को मैं आया हूँ । तीन बाण संग में लाया हूँ ।।
हार जिधर हैं मैं लड़ता हूँ । जिधर दलों के संग अड़ता हूँ ।।
आज्ञा पहले आप से पाऊँ । माता के मैं वचन पुगाऊँ ।।
युद्ध देखन की इच्छा भारी । आज्ञा दे दो कृष्ण मुरारी ।।
एक कटारी माता दीन्हीं । उसको तरकस में धर लीन्हीं ।।
पांचो पाण्डव दौड़ के आये । बर्बरीक अपना भेद बताये ।।
हार जिधर जिस दल के मांही । उसकी जीत कराऊँ पल मांही ।।
एक वाण में परबल शक्ति । शिवशंकर की कीन्हीं भक्ति ।।
उनसे ये वरदान लिया है । वो तुमको सच कह भी दिया है ।।

दोहा - मुरलीधर कहने लगे, पाण्डव राजकुमार ।
भीम पुत्र हो तुम बलवानी, तुम नहीं मानो हार ।। क ।।
पाण्डव जन ये जानकर, छाती लियो लगाय ।
मुरलीधर जी रण की नीति, दे धीरज समझाय ।। १४७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मन मोहन ने बात बताई । बर्बरीक को नीति समझाई ।।
बलियों में हो तुम बलवानी । सत पथ गामी चतुर सुजानी ।।

एक वाण में शक्ती भारी । तीनों की तो लीला न्यारी ।।
तुम सचमुच में शक्तिधारी । तुझ जैसा विरला बलधारी ।।
युद्ध भूमि ये जिसने रचाई । तुझको ही ये देखन तांई ।।
एक बात अटकी है आकर । भेद बताऊँगा समझाकर ।।
पाण्डव वंश के तुम हो लाला । सूरज तेज से अधिक उजाला ।।
अटल रहेगा प्रण ये तुम्हारा । हार पक्ष को देवो सहारा ।।
इस में नजर न कोई करता । देख तेज सब कोई डरता ।।

दोहा - तुमरा वंशज एकला, कौरव बेशुम्मार ।
रणभूमि की बिन पूजा के, होगी पाण्डव हार ।। क ।।
तुम जिधर भी हो खड़े, पेश न चाले कोय ।
बिधना ने जो लिखी लेखनी, वो ही निश्चय होय ।। १४८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
बोला बर्बरीक मन मुस्काकर । पिता ताऊ को शीश नवाकर ।।
हमरी हार कभी नहीं होवे । विजय हमारी राही जोहवे ।।
मैं बालक हूँ भोला भाला । तुम जो कहो वही करने वाला ।।
लेकिन हार के दल में लड़ूंगा । उस बेला तुम से भी अड़ूंगा ।।
और कहो जो मैं मानूंगा । आज्ञा तुमरी सत्य जानूंगा ।।
किस विधि पूजा करना चाहो । भेद सभी मुझे खोल बताओ ।।
बोले हँस कर कृष्ण मुरारी । धन्य हो लाला मात तुम्हारी ।।
सच्चो ज्ञान दियो है भारी । महान विलक्षण बुद्धि तुम्हारी ।।
पिता तुम्हारा भी बलवानी । तुम बलियों में चतुर सुजानी ।।
भीम उछल कर छाती लगाया । खुब मिलाप किया चित लाया ।।

युद्धिष्ठिर ने सिर पुचकारा । धन्य हो भीम के लाड़ दुलारा ।।
अर्जुन ने शाबासी दीन्हीं । उछल पकड़ कोली भर लीन्हीं ।।
नकुल सहदेव हैं चाचा प्यारे । अपने वंश को खुब निहारे ।।
बर्बरीक झुक शीश नवाये । लुल्ल लुल्ल सबके पांव दबाये ।।
अति खुशी छाई है भारी । रण दल सुन रहा बातें सारी ।।
रण दल सारा बात बिचारे । पाण्डव की खुशियां को निहारे ।।
एक बली इस वंश का आया । तब खुशियों ने शंख बजाया ।।
एक वाण में करे सफाया । दुर्योधन सुन कर घबराया ।।

दोहा - बर्बरीक मात को याद कर, बोला शीश नवाय ।
वंशज की ही आज्ञा मानूं, प्राण रहे चाहे जाय ।। क ।।
शिव जी के जो वचन है, मेट सकूं ना तोड़ ।
इतनी अर्जी मेरी सुनियो, कह रहा हाथ को जोड़ ।। १४९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मनमोहन ने बात सुनाई । धन्य धन्य हो तुमरी माई ।।
रण पूजा विधि तुम्हें बताऊँ । भेद खोल नीति समझाऊँ ।।
यह इतना रणदल जो भारी । इसमें तीन ही हैं बलधारी ।।
मैं और अर्जुन तुमरे आगे । तुम मिल गए हो आकर सागे ।।
यह रणभुमि दान मांगती । तब पाण्डव को विजय पांवती ।।
शीश के दान की भेंट चढ़ाओ । हे पाण्डव विजयी हो जावो ।।
तीनों में जो शीश का दानी । आगे आओ हे बलवानी ।।
ये आवाज विधाता की है । जन्म भूमि इस माता की है ।।
अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।

।। भजन ।।

बने है याचक कृपानिधान,
माँग रहे हैं बर्बरीक से, आज शीश का दान ।। टेर ।।
समर भूमि की प्यास बुझाओ,
निज मस्तक की भेंट चढ़ाओ,
सब वीरों में नाम कमाओ, हे योद्ध बलवान ।। १ ।।

हँसो वीर धन्य घड़ी ये आई
याचक बनकर खड़े कन्हाई,
एक तमन्ना थी यदुराई, देखूँ युद्ध महान ।। २ ।।

बोले कृष्ण ये वचन हमारा,
अमर रहेगा शीश तुम्हारा,
पूजेगा तुझको जग सारा, कलयुग के दरम्यान ।। ३ ।।

हँसते-हँसते शीश दिया है,
हरि ने गिरि पर धरा दिया है,
सारा ताण्डव देख लिया है, देकर पूरा ध्यान ।। ४ ।।

महाभारत का हाल सुनाया,
श्याम नाम वरदान में पाया,
जो कोई इसके दर पे आया, मिली उसे मुस्कान ।। ५ ।।

।। बर्बरीक द्वारा शीश का दान ।।

दोहा - कृष्ण के सन्मुख आ गये, बर्बरीक बलवान ।
मैं दे दूंगा सुनो विधाता, अपने शीश का दान ।। क ।।
माता ने शिक्षा देई, मांगे तुम से दान ।
कभी उसे लौटाना नहीं, चाहे जावे प्राण ।। १५० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
तेज किरण प्रभु के मुख निकरी । बर्बरीक के मुख जा बिखरी ।।
बर्बरीक को ज्ञान हुआ है । दिव्य ज्योति से ध्यान हुआ है ।।
वही चतुर्भुज रुप दिखाया । पत्ता छेदन वक्त जो आया ।।
करके प्रणाम कही है बानी । दयानिधे तुम अन्तर ध्यानी ।।
रण देखन की है अभिलाषा । मुझको प्रभु से पूरी आशा ।।
यदुराई मुसका कर बोले । हे बलवानी तुम हो भोले ।।
अर्जुन सम तुम मुझको प्यारे । तीजा नाहीं भेद निहारे ।।
अपनी कला तुमको दिखलाई । अमर ज्योति है ये सकलाई ।।
इस शक्ति से युद्ध निहारो । खम्भ पै बैठ के बात बिचारो ।।
हार जीत की कथा सुनाना । और भी हमरे संग बतलाना ।।

दोहा - माँ कटारी जो देई, लीन्हीं खैच निकाल ।
शीश के दान की तैयारी, करै अहिला का लाल ।। क ।।
एक हाथ शीश केश को, दूजे पकड़ी कटार ।
श्री कृष्ण के हाथ में दीनो, धड़ से शीश उतार ।। १५१ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
देवन ने आ शंख बजाये । बांध कतार विमान सजाये ।।
फूलों की वर्षा हूई भारी । अमर रहेगी कथा तुम्हारी ।।
याही वाणी देव पुकारें । धन्य धन्य हो पाण्डव उच्चारें ।।
श्री कृष्ण दोनों हाथों में । शीश लिये हैं खोये बातों में ।।
अपने रुप की निज शकलाई । शीश के नेत्रों में परछाई ।।
देता अद्भूत मोहन दिखाई । श्याम रुप वही कृष्ण कन्हाई ।।

अपनी परछाई के संग बोले । अन्तर पट बर्बरीक के खोले ।।
अर्जुन समझे चतुर सुजानी । और न जाने कोई बलवानी ।।
धड़ की नीति सोच सम्भाला । पूज्यनीय होगा रखवाला ।।
विधि विधान नीति चतुराई । सब कीन्हीं मोहन यदुराई ।।

दोहा - रण भूमि के बीच में, खम्भ बनायो एक ।
शीश के दानी को बिठलायो, रण बीती सब देख ।। क ।।
न्याय तख्त पर बैठ कर, दानी हुआ मगन ।
दिव्य ज्योति नेत्रों में धारी, युद्ध देखन की लगन ।। १५२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
रथ पर आये हैं यदुराई । खम्भ बैठाई अपनी परछाई ।।
अर्जुन के संग बात बिचारी । सज रण बांके हो होशियारी ।।
अर्जुन बोला हे त्रिपुरारी । कृष्ण कन्हैया लीला धारी ।।
तुमरी माया अपरम्पारी । देख रही युद्ध लीला सारी ।।
दूजी लीला युद्ध करावे । पहली युद्ध देखन को जावे ।।
दो लीलायें कैसी रचाई । इनती हमरे समझ न आई ।।
मन मोहन ने भेद बताया । सखा सम्बोधित शब्द सुनाया ।।
महाभारत की अन्त कहानी । इसमें मरे सभी बलवानी ।।
आगे कलियुग का पहरा है । वो नीति में अति गहरा है ।।
बल विद्या नहीं देवे दिखाई । कला अनोखी हो गुमराई ।।
जब विद्या की नहीं निशानी । मंद बुद्धि के होंगे प्राणी ।।
कलि काल गर्जन कर गाजे । धर्म तो पीठ दिखाकर भाजे ।।
धर्म के रक्षक जो हों प्राणी । निष्कलंक वंशही के ज्ञानी ।।

वो ही प्राणी पथ नहीं छोड़े । धर्म को धीरज देकर मोड़े ।।
कलंक वंशी वर्ण शंकर होंगे । पाप नीति में चतुर होवेंगे ।।
घोर अन्याय करे ये प्राणी । वर्ण शंकर की यही निशानी ।।

दोहा - जो प्राणी सत धर्म पर, डटे रहें हर रोज ।
उनकी रक्षक ये परछाई, उनको काहे सोच ।। क ।।
इस कारन से हे सखा, लीला कीन्हीं दोय ।
चार कलायें खम्भ पर बैठी, बारह कला युद्ध होय ।। १५३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अर्जुन कर प्रणाम पुकारे । लीलाधर की ओर निहारे ।।
तुम्हरी माया मोहनी सारी । एक भेद ओर कहो मुरारी ।।
बारह कलाएं संग तुम्हारे । चार कलाएं युद्ध निहारें ।।
श्याम रुप की मोहनी काया । दो भागों में करती माया ।।
कलियुग शक्ति परबल बताई । ये नीति तुमने समझाई ।।
शीश नेत्रों में है परछाई । सतपथ प्राणी की बने सहाई ।।
कलियुग में ये भारी शक्ति । कृष्ण कला की मोहनी भक्ति ।।
इसका सहारा जो नहीं लेवे । वो कलियुग में कैसे रहवे ।।
उसको कैसे भेद लगेगा । किस विद्या से ज्ञान जगेगा ।।
इतनी बात बताओ देवा । नित करता हूँ तुमरी सेवा ।।

दोहा - युद्ध करो फिर भेद बताऊँ, ज्योत का चमत्कार ।
मिगसर सुदी त्रयोदशी कल, वार है मंगलवार ।। क ।।
अर्जुन को समझाय कर, कीन्ही है होशियार ।
बाण चलाओ पाण्डव वंशी, युद्ध है शुरु अपार ।। १५४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
अर्जुन बाण तान कर मारे । भीम गदा को खूब उछारे ।।
अपने मन की सब कोई करते । रण भूमि में नाहीं डरते ।।
शीश की ज्योति को सभी निहारें । कौन मरत है कौन है मारे ।।
कट कर शीश धरन पर गिरते । चक्रधारी हैं जिधर को फिरते ।।
अम्बे भवानी खप्पर धारी । लहू पीवे मारे किलकारी ।।
पीछे योगिनी ताण्डव करती । लहू पीवत है खप्पर भरती ।।
भैरव खड्ग हाथ में धारी । देता चक्कर करे संघारी ।।
पाँचो पाण्डव मग्न हो डोले । वो तो मुख से कछू नाहीं बोले ।।
संघार हो गया रण दल सारा जिधर चक्रधारी है ललकारा

दोहा - युद्ध विसर्जन हो गया, पाण्डव करें विश्राम ।
अर्जुन के मुख मांही निकले, जै जै हो घनश्याम ।। क ।।
युद्धिष्ठिर श्रीश्याम संग, बातें करे अनेक ।
होनी तो होके रहती, लिखा विधि ने लेख ।। १५५ ।।